

श्री रुकमणि मन्दिर दर्शन लाइ मिठी अमड़ि अर्जु कयो  
 साईं अ खे घणी विनय सां हथिड़ा जोड़े चयो  
 मजीं अर्जु अमड़ि जो हलिया दर्शन लाइ दिलदार  
 घुमंदा घुमंदा झंगल मां आया मन्दिर मंझार  
 प्रसादु देई पुजारी अ खे कयो प्रीति मंझा प्रणाम  
 दर्शन करे रुकमणि अमड़ि जो थियो अन्दर में आराम  
 जै जै श्री रुकमणि महाराणी महाराणी ॥  
 द्वारिकाधीश पट महिशी प्यारी यदु कुल जी ठकुराणी ॥  
 रूप उजागरि सभ गुण आगरि शीलवंत छबि खानी ॥  
 प्राण वल्लभ प्रति नितु अनुकूला पिय उर आनंद दानी ॥  
 भोर स्वभावा भीरु भामिनी नितु बोलत मधुरी बानी ॥  
 विदर्भ कुल मण्डनि अध अखण्डनि महिमा मधुर महानी ॥  
 प्रदुमन जननी जग जननी मैया सदां भगुवंत मन भाणी ॥  
 सदा सुहागिणि तुम वद भागिणि सतवंती सतियाणी ॥  
 प्रेमभक्ति प्रदायनि माता दया दीन दरशानी ॥  
 श्री पार्थिवि चंद पद परप्रेम में रहूं सदां मस्तानी ॥  
 कोकिलि हो विहरूं कुंजनि में पद पंकज लपटानी ॥  
 शोभाशील गुण खानि स्वामिनि पै वारि पियूं नितु पानी ॥  
 श्री मैथिनि माग अनुराग अचल दो मिलै चरण दूलहु दिल जानी ॥  
 श्री जानकी चंद पद कंज युगल पै गरीबि श्री खण्डि कुलबानी ॥  
 श्री वैदर्भी प्रसन्न थी बुधी विनय भरी वाणी

वाह गरीबि श्री खण्डि तूं सुघड़ सियाणी  
नम्रता भरिए नीह सां तूं मुंहिजे मन भाणी  
तूं सहिचरि आहीं साकेत जी कोकिलि कल्याणी  
गरीबि श्री खण्डि गढ़िजी माणियो सुखड़ा सुबहानी  
दशरथ जो दानी, सदां कुद्राएव कछ में ॥